प्राचीन एवं अर्वाचीन त्रिस्तुतिक गच्छ

डा. शिवप्रसाद

पूर्व मध्यकाल में श्वेताम्बर श्रमणसंघ का विभिन्न गच्छों और उपगच्छों में विभाजन जैन धर्म के इतिहास की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना है। चन्द्रकुल (बाद में चंद्रगच्छ) से अनेक छोटी-बड़ी शाखाओं (गच्छों) का प्रादुर्भाव हुआ और ये शाखाएँ पुनः कई उपशाखाओं में विभाजित हुईं। चन्द्रकुल की एक शाखा (वडगच्छ/बृहद्गच्छ) के नाम से प्रसिद्ध हुई। वडगच्छ से वि.सं. ११४९ में पूर्णिमागच्छ का प्रादुर्भाव हुआ और पूर्णिमागच्छ की एक शाखा वि.सं. की १३वीं शती से आगमिकगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई।

पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक आचार्य चन्द्रप्रभसूरि के शिष्य आचार्य शीलगुणसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं। इस गच्छ में यशोभद्रसूरि, सर्वाणंदसूरि, विजयसिंहसूरि, अमरसिंहसूरि, हेमरत्नसूरि, अमररत्नसूरि, सोमप्रभसूरि, आणंदप्रभसूरि, मुनिरत्नसूरि, आनन्दरत्नसूरि आदि कई विद्वान् एवं प्रभावक आचार्य हुए हैं, जिन्होंने अपने साहित्यिक और धार्मिक क्रियाकलापों से श्वेताम्बर श्रमणसंघ को जीवन्त बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान की।

पूर्णिमागच्छीय आचार्य शीलगुणसूरि और उनके शिष्य देवभद्रसूरि द्वारा जीवदयाणं तक का शक्रस्तव और ६७ अक्षरों का परमेष्ठीमंत्र, तीन स्तुति से देववंदन आदि बातों में आगमपक्ष के समर्थन से वि.सं. १२१४ या १२५० में आगमिकगच्छ अपरनाम त्रिस्तुतिकमत का प्रादुर्भाव हुआ[१] इस गच्छ का त्रिस्तुतिक नाम इसलिए प्रसिद्ध हुआ कि वे आगमिक आधारों पर प्रतिक्रमण में शासनदेवता एवं क्षेत्रपाल आदि की स्तुति का विरोध करते थे तथा अरिहन्त, चैत्य एवं गुरु की स्तुति को ही स्थान देते थे।

आगमिक गच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिए साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के आचार्यो द्वारा लिखित ग्रंथों की प्रशस्तियों तथा इस गच्छ और इसकी शाखाओं की पट्टावलियों का उल्लेख किया जा सकता है। अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के आचार्यों/मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों को रखा गया है, इनकी संख्या सवा दो सौ के आसपास है।

पट्टावलियों द्वारा इस गच्छ की दो शाखाओं-धंधूकीया और विडालंबीया का पता चलता है।

आगमिकगच्छ और उसकी शाखाओं की पट्टावलियों की तालिका इस प्रकार है--

क्र.	पट्टावली का नाम	रचनाकार	संभावित तिथि	सन्द ग्रंथ
१.	आगमिकगच्छपट्टावली	अज्ञात	१३वीं शती लगभग	विधिगच्छीयपट्टावली संग्रह-संपा. जिनविजय, पृष्ठ ९-१२
२.	आगमिकगच्छपट्टावली	अज्ञात	१६वीं शती लगभग	जैनगूर्जरकविओ, भाग-३ परिशिष्ट, संपा. मोहनलाल दलीचंद देसाई पृष्ठ २२२४-२२३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३.	धंधूकीया शाखा की पट्टावली	अज्ञात	१७वीं शती लगभग	वही, पृष्ठ २२३२
४.	विडालंबीया शाखा की पट्टावली	अज्ञात	१८वीं शती लगभग	वही पृष्ठ २२३३
५.	आगमिकगच्छ पट्टावली लगभग	मुनिसागरसूरि १५८-१६२	१६वीं शती	पट्टावली समुच्च्य, भाग-२ जैन सत्यप्रकाश, वर्ष६, अंक ४ जैन परंपरानो इतिहास, भाग-२ पृष्ठ ५४०-५४२ विविधगच्छीय पट्टावली संग्रह, पृष्ठ २३४-२३५
६.	धंधूकीय शाखा की पट्टावली	अज्ञात	१७ वीं शती लगभग	विविधगच्छीय पट्टावली संग्रह, पृष्ठ २३५-२३६

उक्त तालिका की प्रथम पट्टावली में आगमिकगच्छ के प्रवर्तक आचार्य शीलगुणसूरि का पूर्णिमागच्छीय आचार्य चंद्रप्रभसूरि के शिष्य के रूप में उल्लेख है। इसके अतिरिक्त इस पट्टावली से आगमिकगच्छ के इतिहास के बारे में कोई सूचना नहीं मिलती है।

तालिका में प्रदर्शित अंतिम दोनों पट्टावलियां आगमिक गच्छ के प्रकटकर्ता शीलगुणसूरि से प्रारंभ होती हैं। ये पट्टावलियां इस प्रकार हैं--

मुनिसागरसूरि द्वारा रचित आगमिकगच्छपट्टावली में उल्लिखित

गुरु परंपरा की सूची

शीलगुणसूरि (आगमिकगच्छ के प्रवर्तक)
।
देवभद्रसूरि
।
धर्मघोषसूरि
।
यशोभद्रसूरि
।
सर्वाणंदसूरि
।
अभयदेवसूरि
।
वज्रसेनसूरि
।
जिनचन्द्रसूरि
।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमसिंहसूरि
।
रत्नाकरसूरि
।
विजयसिंहसूरि
।
गुणसमुद्रसूरि
।
अभयसिंहसूरि
।
सोमतिलकसूरि
।
सोमचन्द्रसूरि
।
गुणरत्नसूरि
।
मुनिसिंहसूरि
।
शीलरत्नसूरि
।
आणंदप्रभसूरि
।
मुनिरत्नसूरि
।
मुनिसागरसूरि (पट्टावली के लेखक)

तालिका में क्रमांक ६ पर प्रदर्शित आगमिकगच्छ (घंधूकीया शाखा) की पट्टावली में उल्लिखित गुरु-परंपरा की सूची -

शीलगुणसूरि
।
देवभद्रसूरि
।
धर्मघोषसूरि
।
यशोभद्रसूरि
।

सर्वाणंदसूरि	अभयदेवसूरि	वज्रसेनसूरि
।		
जिनचन्द्रसूरि		
।		
विजयसिंहसूरि		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

|

अभयसिंहसूरि

|

अमरसिंहसूरि

|

हेनरत्नसूरि

|

अमररत्नसूरि

|

सोमरत्नसूरि

|

गुणनिधानसूरि

|

उदयरत्नसूरि

|

सौभाग्यसुन्दरसूरि

|

धर्मरत्नसूरि

|

मेघरत्नसूरि

जैसा कि स्पष्ट है कि उक्त दोनों पट्टावलियां आगमिकगच्छ के प्रकटकर्ता शीलगुणसूरि से प्रारंभ होती है। इनमें प्रारंभ के ४ आचार्यों के नाम भी समान है, अतः इस समय तक शाखाभेद नहीं हुआ था, ऐसा माना जा सकता है। आगे यशोभद्रसूरि के तीन शिष्यों — सर्वाणंदसूरि, अभयदेवसूरि और वज्रसेनसूरि को पट्टावलीकार मुनिसागरसूरि ने एक सीधे क्रम में रखा है, वहीं धंधूकीया शाखा की पट्टावली में उन्हें यसोभद्रसूरि का शिष्य बतलाया गया है। सर्वाणंदसूरि की शिष्य परंपरा में जिनचंद्रसूरि हुए, शेष दो आचार्यों अभयदेवसूरि और वज्रसेनसूरि की शिष्यपरंपरा आगे नहीं चली। जिनचंद्रसूरि के शिष्य विजयसिंहसूरि का दोनों पट्टावलियो में समान रूप से उल्लेख है। पट्टावलीकार मुनिसागरसूरि ने जिनचन्द्रसूरि के दो अन्य शिष्यों हेमसिंहसूरि और रत्नाकरसूरि का भी उल्लेख किया है, परंतु उनकी परंपरा आगे नहीं चली। विजयसिंहसूरि के शिष्य अभयसिंहसूरि का नाम भी दोनों पट्टावलियों में समान रूप से मिलता है। अभयसिंहसूरि के दो शिष्यों अमरसिंहसूरि और सोमतिलकसूरि से यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हो गया। अमरसिंहसूरि की शिष्यसंतति आगे चलकर धंधूकीया शाखा और सोमतिलकसूरि की शिष्य परंपरा विडालंबीया शाखा के नाम से जानी गई। यह उल्लेखनीय है कि प्रतिमा-लेखों में कहीं भी इन शाखाओं का उल्लेख नहीं हुआ है, वहां सर्वत्र केवल आगमिकगच्छ का ही उल्लेख है, किन्तु कुछ प्रशस्तियों में स्पष्ट रूप से इन शाखाओं का नाम मिलता है तथा दोनों शाखाओं की पट्टावलियां तो स्वतंत्र रूप से मिलती ही हैं, जिनकी प्रारंभ में चर्चा की जा चुकी है।

अभयसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित एक जिनप्रतिमा पर वि.सं. १४२१ का लेख उत्कीर्ण है, अतः यह माना जा सकता है कि वि.सं. १४२१ के पश्चात् अर्थात् १५वीं शती के मध्य के आसपास यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हुआ होगा।

चूँकि इस गच्छ के इतिहास से संबद्ध जो भी साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध हैं, वे १५वीं शती के पूर्व के नहीं हैं और इस समय तक यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हो चुका था, अतः इन दोनों शाखाओं का ही अध्ययन कर पाना संभव है। शीलगुणसूरि तक के ८ पट्टधर आचार्यों में केवल अभयसिंहसूरि का ही वि.सं. १४२१ के एक प्रतिमा लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के रूप में उल्लेख है। शेष ७ आचार्यों के बारे में मात्र पट्टावलियों से ही न्यूनाधिक सूचनाएं प्राप्त होती हैं, अन्य साक्ष्यों से नहीं। लगभग २०० वर्षों की अवधि में किसी गच्छ में ८ पट्टधर आचार्यों का होना असंभव नहीं लगता, अतः आगमिक गच्छ के विभाजन के पूर्व इन पट्टावलियों की सूचना को स्वीकार करने में कोई बाधा नहीं है।

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है अभयसिंहसूरि के पश्चात् उनके शिष्यों अमरसिंहसूरि और सोमतिलकसूरि की शिष्यसन्तति आगे चलकर क्रमशः धन्धूकीया शाखा और विडालंबीयाशाखा के नाम से जानी गई, यह बात निम्न प्रदर्शित तालिका से स्पष्ट होती है-

- शीलगुणसूरि (आगमिकगच्छ के प्रवर्तक)
  - देवभद्रसूरि
    - धर्मघोषसूरि
      - यशोभद्रसूरि
        - सर्वानन्दसूरि
          - जिनचन्द्रसूरि
            - विजयसिंहसूरि
              - अभयसिंहसूरि
                - अमरसिंहसूरि
                  - हेमरत्नसूरि
                    - अमररत्नसूरि
                      - सोमरत्नसूरि
                        - धंधूकीया शाखा प्रारंभ ....
              - गुणसमुद्रसूरि
                - सोमतलिकसूरि
                  - सोमचंद्रसूरि
                    - गुणरत्नसूरि
                      - मुनिसिंहसूरि
                        - विडालंबीया शाखा प्रारंभ ....
            - हेमसिंहसूरि
            - रत्नाकरसूरि
        - अभयदेवसूरि
        - वज्रसेनसूरि

अध्ययन की सुविधा के लिए दोनों शाखाओं का अलग-अलग विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। इनमें सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों के विवरणों की विवेचना की गई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक साक्ष्य

१. **पुण्यसाररास**[२]--यह कृति आगमगच्छीय आचार्य हेमरत्नसूरि के शिष्य साधुमेरू द्वारा वि.सं. १५०१ पौषवदि ११ सोमवार को धंधूका नगरी में रची गई। कृति के अंत में रचनाकार ने अपनी गुरु परंपरा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है--

अमरसिंहसूरि
।
हेमरत्नसूरि
।
साधुमेरू (रचनाकार)

२. **अमररत्नसूरिफागु**[३] मरुगुर्जर भाषा में लिखित ८ गाथाओं की इस कृति को श्री मोहनलाल दलीचन्द्र देसाई ने वि.संवत् की १६वीं शती की रचना माना है। इस कृति में रचनाकार ने अपना परिचय केबल अमररत्नसूरि शिष्य इतना ही बतलाया है। यह रचना प्राचीन फागुसंग्रह में प्रकाशित है।

अमररत्नसूरिं
।
अमररत्नसूरिशिष्य

३. **सुन्दरराजारास**[४]-आगमगच्छीय अमररत्नसूरि की परंपरा के कल्याणराजसूरि के शिष्य क्षमाकलश ने वि.सं. १५५१ में इस कृति की रचना की। क्षमाकलश की दूसरी कृति ललिताङ्गकुमाररास वि.सं. १५५३ में रची गई है। दोनों ही कृतियां मरु गुर्जर भाषा में है। इसकी प्रशस्ति में रचनाकार ने अपनी गुरु परंपरा का सुन्दर परिचय दिया है, जो इस प्रकार है--

अमररत्नसूरि
।
सोमरत्नसूरि
।
कल्याणराजसूरि
।
क्षमाकलश (सुन्दरराजारास एवं ललिताङ्गकुमाररास के कर्ता)

४. **लघुक्षेत्रसमासचौपाई**[५]--यह कृति आगमगच्छीय मतिसागरसूरि द्वारा वि.सं. १५९४ में पाटन नगरी में रची गई है। इसकी भाषा मरु-गुर्जर है। रचना के प्रारंभ और अंत में रचनाकार ने अपनी गुरु-परंपरा की चर्चा की है, जो इस प्रकार है--

सोमरत्नसूरि
।
उदयरत्नसूरि
।
गुणमेरूसूरि
।
मतिसागरसूरि (रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिलेखीय साक्ष्य

आगमिक गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थङ्कर प्रतिमाओं पर वि.सं. १४२१ से वि.सं. १६८३ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इन प्रतिमालेखों के आधार पर इस गच्छ के कुछ मुनिजनों के पूर्वापर संबंध स्थापित होते हैं, जो इस प्रकार हैं--

१. **अमरसिंहसूरि**-- इनके द्वारा वि.सं. १४५१ से वि.सं. १४७८ के मध्य प्रतिष्ठापित ७ प्रतिमालेख उपलब्ध हैं, इनका विवरण इस प्रकार हैं--

वि.सं. १४५१	ज्येष्ठ सुदि ४ रविवार	१ प्रतिमा
वि.सं. १४६२	वैशाख सुदि ३	"
वि.सं. १४६५	माघ सुदि ३ रविवार	"
वि.सं. १४७०	तिथिविहीन	"
वि.सं. १४७५	"	"
वि.सं. १४७६	चैत्र वदि १ शनिवार	"
वि.सं. १४७८	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	"

२. **अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि**-- हेमरत्नसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित ४० प्रतिमाएँ अद्यावधि उपलब्ध हुई हैं। ये सभी प्रतिमाएँ लेख युक्त हैं। इन पर वि.सं. १४८४ से वि.सं. १५२१ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है--

वि.सं. १४८४	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	१ प्रतिमा
" " १४८	मार्गशीर्ष सुदि ५ रविवार	"
" " १४८५	ज्येष्ठ वदि...............	२ प्रतिमा
" " १४८७	माघ सुदि ५ गुरुवार	१ प्रतिमा
" " १४८८	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	"
" " १४८९	माघ वदि २ शुक्रवार	"
" " १४८९	तिथिविहीन	"
" " १४९०	फाल्गुन सोमवार	"
" " १४९१	द्वितीय ज्येष्ठ वदि ७ शनिवार	"
" " १४९२	ज्येष्ठ वदि.............	"
" " १५०३	माघ वदि ८ बुद्धवार	"
" " १५०४	फाल्गुन सुदि १२ गुरुवार	"
" " १५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	२ प्रतिमा
" " १५०६	तिथिविहीन	"
" " १५०७	ज्येष्ठ सुदि ९	१ प्रतिमा
" " १५०७	माघ सुदि १३ शुक्रवार	"
" " १५१२	तिथिविहीन	२ प्रतिमा
" " १५१२	ज्येष्ठ वदि ५ सोमवार	१ प्रतिमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

" " १५१२	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	"
" " १५१२	वैशाख वदि १० शुक्रवार	२ प्रतिमा
" " १५१२	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	३ प्रतिमा
" " १५१२	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	१ प्रतिमा
" " १५१५	वैशाख सुदि १० गुरुवार	"
" " १५१५	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	"
" " १५१६	वैशाख सुदि ३	"
" " १५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	"
" " १५१८	माघ सुदि ५ गुरुवार	"
" " १५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	"
" " १५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	२ प्रतिमा
" " १५१९	माघ वदि ९ शनिवार	१ प्रतिमा
" " १५१९	माघ सुदि ३ सोमवार	"
" " १५२१	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	"

३. हेमरत्नसूरि के पट्टधर अमररत्नसूरि-- इनके द्वारा वि.सं. १५२४ से वि.सं. १५४७ के मध्य प्रतिष्ठापित १८ प्रतिमाएं उपलब्ध हुई हैं। इनका विवरण इस प्रकार है--

वि.सं. १५२४	वैशाख सुदि २ गुरुवार	१ प्रतिमा
" " १५२४	कार्तिक वदि १३ शनिवार	"
" " १५२५	तिथिविहीन	"
" " १५२७	" "	"
" " १५२८	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	"
" " १५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	२ प्रतिमा
" " १५३०	माघ वदि २ शुक्रवार	१ प्रतिमा
" " १५३१	माघ सुदि ५	"
" " १५३२	वैशाख सुदि ३	४ प्रतिमा
" " १५३२	ज्येष्ठ वदि १३ बुद्धवार	१ प्रतिमा
" " १५३५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	"
" " १५३५	आषाढ़ सुदि ३ शुक्रवार	"
" " १५३६	वैशाख सुदि २ मंगलवार	"
" " १५४७	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	"

४. अमररत्नसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि-- इनके द्वारा प्रतिष्ठापित १२ प्रतिमाएं मिलती हैं, जो वि.सं. १५४८ से वि.सं. १५८१ तक की हैं। इसका विवरण इस प्रकार हैं--

वि.सं. १५४८	वैशाख सुदि ३	१ प्रतिमा
" " १५५२	वैशाख सुदी ३	"
" " १५५२	माघ वदि ८ शनिवार	"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

" " १५५५	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	"
" " १५५६	वैशाख सुदि १३ रविवार	"
" " १५६७	वैशाख सुदि ३ बुद्धवार	"
" " १५६९	वैशाख सुदि ९ शुक्रवार	"
" " १५७१	चैत्र वदि २ गुरुवार.२	"
" " १५७१	चैत्र वदि ७ गुरुवार	"
" " १५७३	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	"
" " १५७३	फाल्गुन सुदि २ रविवार	"
" " १५८१	माघ सुदि ५ गुरुवार	"

इस प्रकार अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर आगमगच्छ के उक्त मुनिजनों का जो पूर्वापर संबंध स्थापित होता है, वह इस प्रकार है--

अमरसिंहसूरि (वि.सं. १४५१-१४८३)
।
हेमरत्नसूरि (वि.सं. १४८४-१५२१)
।
अमररत्नसूरि (वि.सं. १५२४-१५४७)
।
सोमरत्नसूरि (वि.सं. १५४८-१५८१)

पूर्व प्रदर्शित पट्टावलियों की तालिका में श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई द्वारा आगमिकगच्छ और उसकी दोनों शाखाओं की अलग-अलग प्रस्तुत की गई पट्टावलियों को रखा गया है। देसाई द्वारा दी गई आगमिकगच्छ की गुर्वावली शीलगुणसूरि से प्रारंभ होकर हेमरत्नसूरि तक एवं धंधूकीया शाखा की गुर्वावली अमररत्नसूरि से प्रारंभ होकर मेघरत्नसूरि तक के विवरण के पश्चात् समाप्त होती है। ये दोनों गुर्वावलियां मुनि जिनविजय जी द्वारा दी गई धंधूकीयाशाखा की गुर्वावली (जो शीलगुणसूरि से प्रारंभ होकर मेघरत्नसूरि तक के विवरण के पश्चात् समाप्त होती है) से अभिन्न है, अतः इन्हें अलग-अलग मानने और इनकी अप्रामाणिकता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा ज्ञात पूर्वोक्त चार आचार्यों (अमरसिंहसूरि- हेमरत्नसूरि- अमरत्नसूरि - सोमरत्नसूरि) के नाम इसी क्रम में धंधूकीया शाखा की पट्टावली में मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रंथप्रशस्तियों द्वारा आगमिक गच्छ के मुनिजनों के जो नाम ज्ञात होते हैं, उनमें से न केवल कुछ नाम धंधूकीयाशाखा की पट्टावली में मिलते हैं, बल्कि इस शाखा के साधुमेरूसूरि, कल्याणराजसूरि, क्षमाकलशसूरि, गुणमेरूसूरि, मतिसागरसूरि आदि ग्रन्थकारों के बारे में केवल उक्त ग्रन्थ प्रशस्तियों से ही ज्ञात होते हैं।

इस प्रकार धंधूकीया शाखा की परंपरागत पट्टावली में उल्लिखित अभयसिंहसूरि, अमरसिंहसूरि, हेमरत्नसूरि, अमररत्नसूरि, सोमरत्नसूरि आदि आचार्यों के बारे में जहाँ अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा कालनिर्देश की जानकारी होती है, वहीं ग्रंथप्रशस्तियों के आधार पर इस शाखा के अन्य मुनिजनों के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के संयोज से आगमिकगच्छ की धंधूकीया शाखा की परंपरागत पट्टावली को जो नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित आगमिकगच्छ (धंधूकीया शाखा) का वंश वृक्ष

(तालिका-१)

- शीलगुणसूरि
  - देवभद्रसूरि
    - धर्मघोषसूरि
      - यशोभद्रसूरि
        - सर्वाणंदसूरि
          - जिनचन्द्रसूरि
            - विजयसिंहसूरि
              - अभयसिंहसूरि (वि.सं. 1421) प्रतिमालेख
                - अमरसिंहसूरि (वि.सं. 1451-1483) प्रतिमालेख
                  - हेमरत्नसूरि (वि.सं. 1484-1521) प्रतिमालेख
                    - साधुमेरु (वि.सं. 1501 में पुण्यसाररास के कर्ता)
                    - अमररत्नसूरि (वि.सं. 1524-43) प्रतिमालेख
                      - सोमरत्नसूरि (वि.सं. 1584-81) प्रतिमालेख
                        - गुणनिधानसूरि
                          - उदयरत्नसूरि (वि.सं. 1586-87) प्रतिमालेख
                            - सौभाग्यसुन्दरसूरि (वि.सं. 1610) प्रतिमा लेख
                              - धर्मरत्नसूरि
                                - मेघरत्नसूरि
                            - गुणमेरूसूरि
                              - मतिसागरसूरि (वि.सं. 1594) लघुक्षेत्रसमासचौपाई के रचनाकार
                      - कल्याणराजसूरि
                        - क्षमाकलश (वि.सं. 1551 में सुंदरराजारास) (वि.सं. 1553 में ललिताङ्गकुमाररास)
                      - अमररत्नसूरिशिष्य (अमररत्न-सूरिगाफु के कर्ता)
        - अभयदेवसूरि
        - वज्रसेनसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैसा कि पूर्व में ही स्पष्ट किया जा चुका है, अभयसिंहसूरि के पश्चात् उनके शिष्यों अमरसिंहसूरि और सोमतिलकसूरि से आगमिकगच्छ की दो शाखाएं अस्तित्व में आईं। अमरसिंहसूरि की शिष्यसंतति आगे चलकर धंधूकीया शाखा के नाम से जानी गई। उसी प्रकार सोमतिलकसूरि की शिष्य परंपरा विडालंबीया शाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई।

मुनिसागरसूरि द्वारा रचित आगमिकगच्छपट्टावली में अभयसिंहसूरि के पश्चात् सोमतिलकसूरि से मुनिरत्नसूरि तक ७ आचार्यों का क्रम इस प्रकार मिलता है--

सोमतिलकसूरि
|
सोमचंद्रसूरि
|
गुणरत्नसूरि
|
मुनिसिंहसूरि
|
शीलरत्नसूरि
|
आनन्दप्रभसूरि
|
मुनिरत्नसूरि

साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर इस पट्टावली के गुणरत्नसूरि और मुनिरत्नसूरि के अन्य शिष्यों के संबंध में भी जानकारी प्राप्त होती है।

गजसिंहकुमार रास ६ (रचनाकाल वि.सं. १५१३) की प्रशस्ति में रचनाकार देवरत्नसूरि ने अपने गुरु गुणरत्नसूरि का ससम्मान उल्लेख किया है।

इसी प्रकार मलयसुन्दरीरास ७ (रचनाकाल वि.सं. १५४३) और कथाबत्तीसी (रचनाकाल वि.सं. १५५७) की प्रशस्तियों में रचनाकार ने अपनी गुरुपरंपरा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है--

मुनिसिंहसूरि
|
मतिसागरसूरि
|
उदयधर्मसूरि (रचनाकार)

आगमिकगच्छीय उदयधर्मसूरि (द्वितीय) द्वारा रचित धर्मकल्पद्रुम की प्रशस्ति में रचनाकार ने अपनी गुरु-परंपरा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है--

आनन्दप्रभसूरि
|
मुनिरत्नसूरि
├── मुनिसागरसूरि
│ |
│   उदयधर्मसूरि (धर्मकल्पद्रुम के रचनाकार)
└── आनन्दरत्नसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा इस पट्टावली के अंतिम चार आचार्यों का जो तिथिक्रम प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है--

मुनिसिंहसूरि द्वारा वि.सं. १४९९ कार्तिक सुदी ५ सोमवार को प्रतिष्ठापित भगवान् शांतिनाथ की एक प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसी प्रकार मुनिसिंहसूरि के शिष्य शीलरत्नसूरि द्वारा वि.सं. १५०६ से वि.सं. १५१२ तक प्रतिष्ठापित ५ प्रतिमाएं मिलती हैं। शीलरत्नसूरि के शिष्य आनन्दप्रभसूरि द्वारा वि.सं. १५१३ से वि.सं. १५२७ तक प्रतिष्ठापित ६ प्रतिमाएं प्राप्त होती है। आनन्दप्रभसूरि के शिष्य मुनिरत्नसूरि द्वारा वि.सं. १५२३ और वि.सं. १५४२ में प्रतिष्ठापित २ जिन प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा ही मुनिरत्नसूरि के शिष्य आनन्दरत्नसूरि का भी उल्लेख प्राप्त होता है। उनके द्वारा प्रतिष्ठापित ५ तीर्थङ्कर प्रतिमाएँ मिली हैं, जो वि.सं. १५७१ से वि.सं. १५८३ तक की हैं। उक्त बात को तालिका के रूप में निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है--

सोमतिलकसूरि
।
सोमचंद्रसूरि
।
गुणरत्नसूरि
।
मुनिसिंहसूरि (वि.सं. १४९९) १ प्रतिमालेख
।
शीलरत्नसूरि (वि.सं. १५०६-१५१२) ५ प्रतिमालेख
।
आनन्दप्रभसूरि (वि.सं..१५१३-१५-२७) ६ प्रतिमालेख
।
मुनिरत्नसूरि (वि.सं. १५२३-१५४२) २ प्रतिमालेख
।
आनन्दरत्नसूरि (वि.सं. १५७१-१५८३) ५ प्रतिमालेख

श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई द्वारा प्रस्तुत आगमिकगच्छ की विडालंबीया शाखा की गुर्वावली इस प्रकार है--

मुनिरत्नसूरि
।
आनन्दरत्नसूरि
।
ज्ञानरत्नसूरि
।
हेमरत्नसूरि
।
┌───────────────┐

उदयसागरसूरि — धर्महंससूरि (वि.सं. १६२० के लगभग नववाड ढालबंध के रचनाकार)

उदयसागरसूरि
।
भानुभट्टसूरि
।
माणिक्यमंगलसूरि
(वि.सं. १६३९ में अंबडरास के रचनाकार)

उक्त पट्टावली के आधार पर मुनिसागरसूरि द्वारा रचित आगमिकगच्छपट्टावली में ६ अन्य नाम भी जुड़ जाते हैं। इस प्रकार ग्रन्थ प्रशस्ति, प्रतिमालेख तथा उपर्युक्त पट्टावली के आधार पर मुनिसागरसूरि द्वारा रचित पट्टावली अर्थात् आगमिकगच्छ की विडालंबीया शाखा की पट्टावली को जो नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(तालिका-२)

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित आगमिकगच्छ (विडालंबीयाशाखा) का वंश वृक्ष

- शीलगुणसूरि
  - देवभद्रसूरि
    - धर्मघोषसूरि
      - यशोभद्रसूरि
        - सर्वाणंदसूरि
          - जिनचंद्रसूरि
            - विजयसिंहसूरि
              - अभयसिंहसूरि
                - अमरसिंहसूरि
                - सोमतिलकसूरि
                  - सोमचंद्रसूरि
                    - गुणरत्नसूरि
                      - देवरत्नसूरि (गजसिंहसकुमाररास)
                      - मुनिसिंहसूरि (वि.सं. १४९९वि.सं. १५१३ के रचनाकार) प्रतिमा का लेख
                        - मतिसागरसूरि (वि.सं. १५०६-१५१३ प्रतिमा लेख)
                        - शीलरत्नसूरि
                          - उदयधर्मसूरि (प्रथम) (मलयसुन्दरीरास वि.सं. १२४३)
                          - आनन्दप्रभसूरि (वि.सं. १४१३-१५१४ कथाबत्तीसी वि.सं. १५५७)
                            - गुणप्रभसूरि (वि.सं. १५२०) प्रतिमा लेख
                            - मुनिरत्नसूरि (वि.सं. १५२३-१५४३) प्रतिमा लेख
                              - मुनिसागर सूरि (आगमिकगच्छगुर्वावली) के रचनाकार
                                - उदयधर्मसूरि (द्वितीय) (धर्मकल्पद्रुम के रचनाकार०)
                                  - रत्नतिलकसूरि (वि.सं. १५८४ के मेघदूत की प्रति के लेखक)
                                - अमरसिंहसूरि
                              - आनन्दरत्नसूरि (वि.सं. १५७१-१५८३) प्रतिमा लेख
                                - ज्ञानरत्नसूरि
                                  - हेमरत्नसूरि (वि.सं. १५७७) प्रतिमा लेख
            - हेमसिंहसूरि
            - रत्नाकरसूरि
        - अभयदेवसूरि
        - वज्रसेनसरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदयसागरसूरि — धर्महंससूरि (वि.सं. १६२० के लगभग नववाडढालबंध के रचनाकार)

उदयसागरसूरि
|
भानुभट्टसूरि
|
माणिक्यमंगलसूरि
(वि.सं. १६३९ में अंबडरास के रचनाकार)

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर आगमिक गच्छ के जयानन्दसूरि, देवरत्नसूरि, शीलरत्नसूरि, विवेकरत्नसूरि, संयमरत्नसूरि, कुलवर्धनसूरि, विनयमेरूसूरि, जयरत्नगणि, देवरत्नगणि, वरसिंहसूरि, विनयरत्नसूरि आदि कई मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं। इन मुनिजनों के परस्पर संबंध भी उक्त साक्ष्यों के आधार पर निश्चित हो जाते हैं और इनकी जो गुर्वावली बनती है, वह इस प्रकार है-

?
:
:
:
जयानन्दसूरि (वि.सं. १४७२-१४९४)
|
- देवरत्नसूरि (वि.सं. १५०५-१५३३) प्रतिमालेख
- शीलसिंहसूरि (कोष्ठक चिन्तामणि स्वोपज्ञटीका (श्रीचन्द्रचरित वि. सं. १३९४
- विवेकरत्नसूरि (वि.सं. १५४४-७९) प्रतिमा लेख वि.सं. १५७१ में यतिजीतकल्प रचनाकार

विवेकरत्नसूरि
|
संयमरत्नसूरि (वि.सं. १५८०-१६१६)
|
- कुलवर्धनसूरि (वि.सं. १६४३-८३) प्रतिमालेख
- विनयमेरु (वि. सं. १५९९) प्रतिमालेख
- जयरत्नमणि

जयरत्नमणि
|
देवरत्नगणि
|
- वरसिंहसूरि (आवश्यकबालावबोधवृत्ति)
- विनयमरत्नसूरि (वि.सं. १६७३ माघसुदी १३ भगवतीसूत्र की प्रतिलिपि)

आगमिकगच्छ के मुनिजनों की उक्त तालिका का आगमिकगच्छ की पूर्वोक्त दोनों शाखाओं (धूंधकीया शाखा और विडालंबीया शाखा) में से किसी के साथ भी समन्वय स्थापित नहीं हो पाता, ऐसी स्थिति में यह माना जा सकता है कि आगमिकगच्छ में उक्त शाखाओं के अतिरिक्त भी कुछ मुनिजनों की स्वतंत्र परंपरा विद्यमान थी।

इसी प्रकार आगमिकगच्छीय जयतिलकसूरि, मलयचंद्रसूरि २, जिनप्रभसूरि ३, सिंहदत्तसूरि ४ आदि की कृतियां तो उपलब्ध होती है, परंतु उनके गुरु परंपरा के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती है।

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा भी इस गच्छ के अनेक मुनिजनों के नाम तो ज्ञात होते हैं, परंतु उनकी गुरु-परंपरा के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती। यह बात प्रतिमालेखों की प्रस्तुत तालिका से भी स्पष्ट होती है--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख	प्रतिष्ठा स्थान	सन्दर्भ ग्रंथ
१.	१४२०	कार्तिक सुदि ५ रविवार	—	स्तम्भलेख देवकुलिका का लेख	वीर जिनालय, जीरावला	मुनि जयंतविजय संपा. आबू, भाग-५ लेखाङ्क १२२.
२.	१४२१	कार्तिक सुदि ५ रविवार	—	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	जीरावलीतीर्थ चैत्यदेवकुलिका, जैन मंदिर, थराद	लोढ़ा, दौलतसिंह संपा. श्री प्रतिमा लेख संग्रह, लेखाङ्क ३०४ (अ)
३.	१४२१	माघ वदि ११ सोमवार	अभयसिंहसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गोगा दरवाजा, बीकानेर	नाहटा, अगरचंद संपा. बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखाङ्क-१६३६
४.	१४३८	आषाढ़ सुदि ९ शुक्रवार	जयतिलकसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर स्वामी का मंदिर, ओसिया	नाहर, पूरनचंद संपा. जैन लेख संग्रह भाग-१, लेखाङ्क ७९५
५.	१४३९	पौष वदि -----१ रविवार	जयाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	मुनि बुद्धिसागर संपा.-जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह, भाग-२ लेखांक ६३१
५. अ.	१४४०	पौष वदि-----१	श्री तिलकसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर संपा. शत्रुञ्जयगिरिराज दर्शन, लेखाङ्क २६५
६.	१४५१	ज्येष्ठ सुदि ४ रविवार	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की धातु पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, वणा	मुनि विजयधर्मसूरि संपा. प्राचीन लेख संग्रह लेखाङ्क ९४
७.	१४६२	वैशाख सुदि ३	अमरसिंहसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	मुनि बुद्धिसागर पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क २७७
८.	१४६४	माघ सुदि ३ शनिवार	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीजापुर	वही, भाग-१ लेखाङ्क ४२२
९.	१४७०	—	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	वही, भाग-१ लेखाङ्क ८२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०.	१४७१	—	अमरसिंहसूरि	चौबीसी जिन प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त लेखाङ्क ७५
११.	१४७२	ज्येष्ठ सुदि ११	जयाणंदसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, थराद	मुनिबुद्धिसागर पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क ९०१
१२.	१४७५	—	अमरसिंहसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, नदियाड	वही, भाग-२ लेखाङ्क ३९८
१३.	१४७६	चैत्र वदि १ शनिवार	अमरसिंहसूरि	महावीर स्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चोसठिया जी का मंदिर, नागौर	विनयसागर संपा. प्रतिष्ठा लेख संग्रह लेखाङ्क २१५
१४.	१४७६	चैत्र वदि ९ रविवार	जयाणंदसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखाङ्क ४७०
१५.	१४७८	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, पाटडी	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२०
१६.	१४८२	फाल्गुन सुदि ३ रविवार	जयाणंदसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कडाकोटडी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखाङ्क ६१३
१७.	१४८३	माघ वदि ११ गुरुवार	जयाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखाङ्क २१७
१८.	१४८४	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	हेमराजसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद,	वही, भाग-१ लेखाङ्क १२३१
१९.	१४८४	मार्गशीर्ष सुदि ५ रविवार	अमरसिंह के पट्टधर श्री...... रत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद,	वही, भाग-१ लेखाङ्क ९००
२०.	१४८५	ज्येष्ठ वदि.....	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	चंद्रप्रभ स्वामी की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर वणा	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३५
२१.	१४८५	ज्येष्ठमास.......१	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागर पूर्वोक्त, भाग-१ लेखाङ्क ४२३
२२.	१४८७	माघ सुदि ५ गुरुवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखाङ्क १२२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३.	१४८८	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, अगरचंद पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७
२४.	१४८८	—	जयानंदसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेखं	आदिनाथ जिनालय, बालकेश्वर, मुंबई,	नाहटा, पूर्वोक्त भाग-२, लेखाङ्क १७९८
२५.	१४८९	माघ वदि २ शुक्रवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	कुंथुनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखाङ्क ४४०
२६.	१४८९	तिथिविहीन	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखाङ्क १३४६
२७.	१४९०	फाल्गुन... सोमवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरी	पार्श्वनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा. राधनपुर प्रतिमालेखसंग्रह, लेखाङ्क ११८
२८.	१४९१	द्वितीय ज्येषठ वदि ७ शनिवार	हेमरत्नसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पो, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखाङ्क १२६९
२९.	१४९२	ज्येष्ठ वदि..	हेमरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, अगरचंद पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७६३
३०.	१४९३	चैत्रवदि ८ गुरुवार	जयाणंदसूरि	धर्मनाथ की धातु पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२२
३१.	१४९४	माघ सुदि ५ गुरुवार	जयानंदसूरि के शिष्य श्रीसूरि	संभवनाथ की धातु पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १६२ एवं मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२३
३२.	१३९६	फाल्गुन वदि २ शुक्रवार	जयानंदसूरि के शिष्य श्रीसूरि	विमलनाथ की चौबीसी का प्रतिमा लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखाङ्क १०८६
३३.	१४९९	कार्तिक सुदि ५ सोमवार	मुनिसिंहसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ की जिनालय, खेरालु	वही, भाग-१ लेखाङ्क ७५५
३४.	१५००	चैत्रसुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३१
३५.	१५०३	माघ वदि ३ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गोड़ी पार्श्वनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१ लेखाङ्क ४४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६.	१५०३	माघ वदि ८ बुधवार	हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक ३३८
३७.	१५०३	माघ सुदि ४ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ८७८
३८.	१५०३	माघ सुदि ५ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की धातु पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	मुनि जयंतविजय पूर्वोक्त, लेखांक ७८
३९.	१५०४	फाल्गुन सुदि १२ गुरुवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१ लेखांक १३१२
४०	१५०४	—	जिनचंद्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखांक १३०९
४१.	१५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	ओसवालों का मंदिर, पूना	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २०८
४२.	१५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर स्वामी का मंदिर, थराद	लोढ़ा, दौलतसिंह पूर्वोक्त, लेखांक १
४३.	१५०६	चैत्र वदि ४ बुधवार	शीलरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	देहरी नं. ९७, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १७९
४४.	१५०६	चैत्र वदि ५ गुरुवार	हर्षतिलकसूरि सिंहदत्तसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक २८२
४५.	१५०६	पौष वदि २ बुधवार	हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वासुपूज्यस्वामी का जिनालय, बीकानेर	नाहटा, अगरचंद पूर्वोक्त, लेखांक १३२६
४६.	१५०६	तिथिविहीन	अमररत्नसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	हीरालाल गुलाबसिंह का घरदेसर, चितपुर रोड, कलकत्ता	नाहर, पूरनचंद, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १००४
४७.	१५०६	तिथिविहीन	अमररत्नसूरि हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	यति पन्नालाल, का घर देरासर, कलकत्ता	वही, भाग-१ लेखांक ३९१
४८.	१५०७	वैशाख वदि ६ गुरुवार	शीलरत्नसूरि	मुनि सुव्रतस्वामी की प्रतिमा का लेख	नवघरे का मंदिर चेलपुरी, दिल्ली	वही, भाग-१ लेखांक ४७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४९.	१५०७	वैशाख वदि ६ गुरुवार	शीलरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, वडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ९७
५०.	१५०७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय, घाट, जयपुर	विनयसागर पूर्वोक्त, लेखांक ४२०
५१.	१५०७	माघ सुदि १३ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	अभिनंदन स्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ, जिनालय, दंतालवाडो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ६८२
५२.	१५०७	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	शीलरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर वडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ९७
५३.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	चंद्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भरुच	वही, भाग-२, लेखांक ३१५
५४.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक ८४२
५५.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, शकोपुर, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ९०९
५६.	१५०८	वैशाख वदि ११ रविवार	हर्षतिलकसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, भरुच	वही, भाग -२, लेखांक ३४२
५७	१५०८	वैशाख वदि १२ रविवार	जिनरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग-१ लेखांक १३४९
५८.	१५०८	आषाढ सुदि २ रविवार	देवरत्नसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग-२ लेखांक २२०
५९.	१५०९	वैशाख वदि ५ शनिवार	देवरत्नसूरि	कुंथुनाथ की चौबीसी का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग-२ लेखांक ३३१
५९. (अ)	१५(०?) ९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	दे...भिः	आदिनाथ की चौबीसी का लेख	संग्रामसोनी के मंदिर की देवकुलिका, उज्जयन्त	ढाकी, एम.ए.- पं. बेचरदासदोशी स्मृतिग्रन्थ, पृ. १८८
६०.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	हर्षतिलकसूरि	अजितनाथ की प्रतिमाका लेख	शांतिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ९८८
६१.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	जिनरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूरनचंद, पूर्वोक्त, भाग-१ लेखांक १००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ६१९
६३.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	विमलनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	गौड़ीजी भंडार, उदयपुर	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक २६०
६४.	१५११	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	वासूपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, कालोल	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ७१८
६५.	१५११	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग-१ लेखांक १२५०
६६.	१५११	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	देवगुप्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमाका लेख	सीमंधर स्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ११६०
६७.	१५११	माघ सुदि १ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त लेखांक १७०
६८.	१५१२	माघ सुदि १० बुधवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ७२३
६९.	१५१२	ज्येष्ठ वदि ५ सोमवार	हेमरत्नसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचतीर्थी, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर पूर्वोक्त, लेखांक ४३९
७०.	१५१२	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, बडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ९५
७१.	१५१२	वैशाख वदि १० गुरुवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ९५९
७२.	१५१२	वैशाख वदि १० गुरुवार	हेमरत्नसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, बडावली	वही, भाग-१ लेखांक ९४
७३.	१५१२	वैशाख सुदि ५	हेमरत्नसूरि	कुंथुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गोपों का उपाश्रय, बाड़मेर	नाहर, पूरनचंद पूर्वोक्त, भाग-१ लेखांक ७४१
७४.	१५१२	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चंद्रप्रभ स्वामी का जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग-३ लेखांक २१६५ एवं नाहटा, अगरचन्द पूर्वोक्त, लेखांक २७७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७५.	१५१२	-------	हेमरत्नसूरि	नमिनाथ की चौबीसी का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक १३२१
७६.	१५१२	शीलरत्नसूरि आदिरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, वादनवाड़ा,	जैन सत्यप्रकाश, वर्ष ६ अंक १०, पृष्ठ ३७२-७४, लेखांक ८	
७७.	१५१२	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, बडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ९५
७८.	१५१२	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, चोलापोल, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ६९५
७९.	१५१३	चैत्र सुदि ५ बुधवार	आणंदप्रभसूरि	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जीरावला पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक २८७
८०.	१५१३	ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार	देवरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीरामगाम	वही, लेखांक २९२
८१.	१५१३	आषाढ़ सुदि १० गुरुवार	देवरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १०९८
८२.	१५१३	माघ वदि २ शुक्रवार	साधुरत्नसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक ८००
८३.	१५१५	वैशाख सुदि १ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखांक ११६३
८४.	१५१५	वैशाख सुदि १० गुरुवार	हेमरत्नसूरि	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, करमदी	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ५३१
८५.	१५१५	कार्तिक वदि १ रविवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभजिनालय, कडाकोटडी, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ५९३
८६.	१५१५	कार्त्तिक वदि १ रविवार	देवरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, लेखांक १२१२
८७.	१५१५	माघ सुदि ५ शनिवार	पादप्रभसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पालिताना	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ६६०
८८.	१५१५	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खाडीवकाडो, खेड़ा, गुजरात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ४०७
८९.	१५१६	चैत्र वदि ४ गुरुवार	आणंदप्रभसूरि	चंद्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ८८९
९०.	१५१६	वैशाख सुदि ३	हेमरत्नसूरि	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	वही, भाग-२ लेखांक १२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१.	१५१	ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्यबावन जिनालय, मातर	वही, भाग-२, लेखांक ४९९
९२.	१५१६	आषाढ़ सुदि ३ रविवार	देवरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय नाहटों की गवाड़, बीकानेर	नाहटा, अगरचंद, पूर्वोक्त, लेखांक १५१३
९३.	१५१६	आषाढ़ सुदि ९ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	नमिनाथ की चांदी की सपरिकर प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	वही, लेखांक १७६१
९४.	१५१६	कार्त्तिक सुदि १५ शनिवार	सिंहदत्तसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	सुव्रतनाथ जिनालय, खारवाडो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १०३२
९५.	१५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	हेमरत्नसूरि	शीलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १५०५
९६.	१५१७	वैशाख सुदि १२ सोमवार	आणंदप्रभसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक १०८९
९७.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	आणंदप्रभसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	सुविधिनाथ जिनालय, घोघा, काठियावाड़	नाहर, पूरनचंद, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १७६९
९८.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	वही, भाग-१ लेखांक ५५७ एवं विनयासागर, पूर्वोक्त लेखांक ५७२
९९.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चुरु, राजस्थान	नाहटा, अगरंचद पूर्वोक्त, लेखांक २४०८
१००.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	महेंद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक १२८४
१०१.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	पूर्णदेवसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग-१, लेखांक ११३१
१०२.	१५१८	ज्येष्ठसुदि २ शनिवार	देवरत्नसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ८२७
१०३.	१५१८	माघ सुदि ५ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	पद्मप्रभ स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनिविशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २१६
१०४.	१५१९	ज्येष्ठ वदि १ गुरुवार	देवरत्नसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मोतीसा की टूक, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर पूर्वोक्त, लेखांक ४६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५.	१५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ देरासर, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १०८९
१०६.	१५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	पद्मप्रभास्वामी की पंचतीर्थी का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, अञ्जार	नाहर, पूरनचंद, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १७२१
१०७.	१५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चंद्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग-३ लेखांक २३४४
१०८.	१५१९	माघ वदि ९ शनिवार	हेमरत्नसूरि	अजितनाथ की चौबीसी का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, घड़ियाली पोल, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १६०
१०९.	१५१९	माघ सुदि ३ सोमवार	हेमरत्नसूरि	वासुपूज्य की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक ३३०
११०.	१५२०	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	—	शीतलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीरमगाम	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ३४५
१११.	१५२०	वैशाख वदि ७ शनिवार	आणंदप्रभसूरि	मुनि सुव्रतस्वामी की धातु पंचतीर्थी प्रतिमाका लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ देरासर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २३१
११२.	१५२०	वैशाख वदि ७ शनिवार	आणंदप्रभसूरि के शिष्य गुणप्रभसूरि का लेख	संभवनाथ की प्रतिमा	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	बुद्धिसागर पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ८२४
११३.	१५२०	आषाढ़ सुदि ९ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की चौबीसी का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक ६६६
११४.	१५२१	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, अगरचंद-पूर्वोक्त लेखांक १०२२
११५.	१५२३	कार्तिक वदि ५ सोमवार	मुनिरत्नसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १००५
११६.	१५२३	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	सिंहदत्तसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग-१, लेखांक ७१३
११७.	१५२३	फाल्गुन वदि ४ सोमवार	देवरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जील्लावाला देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक ३७०
११८.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	देवरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की धातु-पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ देरासर, लाजग्राम	मुनि जयंतविजय, पूर्वोक्त, भाग-५, लेखांक ४७७
११९.	१५२४	कार्तिक वदि १३ शनिवार	अमररत्नसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, गांभू	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ७४
१२०.	१५२४	वैशाख सुदि २ गुरुवार	अमररत्नसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त लेखांक ६३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२१.	१५२५	पौष वदि ५ सोमवार	देवरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, लींबडी	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक ३८८
१२२.	१५२५	माघ सुदि १३ बुधवार	देवरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ९३७
१२३.	१५२५	माघ सुदि १३ बुधवार	जयचंद्रसूरि के पट्टधर देवरत्नसूरि	अभिनंदनस्वामी की चौबीसी का लेख	घेर देरासर, गामदेवी, वाचागांधी रोड, मुंबई	नाहर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १८००
१२४.	१५२५	—	अमररत्नसूरि	कुन्थुनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ४०३
१२५.	१५२७	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	आनन्दप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	वही, लेखांक ४०९
१२६.	१५२७	वैशाख वदि १०	देवरत्नसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्यबावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ४६८
१२७.	१५२७	—	अमररत्नसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सुविधिनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ४०५
१२८.	१५२८	आषाढ़ सुदि ५ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर सोमदेवसूरि	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	राधनपुर	मुनि विशाल विजय पूर्वोक्त, लेखांक २६२ एवं मुनिजयंतविजय, आबू, भाग-५, लेखांक ५१०
१२९.	१५२८	पौष सुदि ३ सोमवार	अमररत्नसूरि	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४१३
१३०.	१५२९	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	अभिनंदस्वामी की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ९४७
१३१.	१५२९	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की रत्नमय प्रतिमा के परिकर का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखांक ६४३
१३२.	१५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	अमररत्नसूरि	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ११४२
१३३.	१५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	अमररत्नसूरि	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, थराद	लोढ़ा, दौलतसिंह पूर्वोक्त, लेखांक ८२
१३४.	१५३०	माघ वदि २ शुक्रवार	अमररत्नसूरि	मुनिसुव्रतस्वामी की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द, पूर्वोक्त, लेखांक १५८२
१३५.	१५३०	माघ सुदि १० गुरुवार	देवरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १०१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३६.	१५३१	माघ सुदि ५	अमररत्नसूरि	चंद्रप्रभस्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत देरासर, डभोई	वही, भाग-१, लेखांक ६५
१३७.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक १८२
१३८.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरत्नसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक १११९
१३९.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरत्नसूरि	सुविधिनाथ की	सुमतिनाथ जिनालय, पालितान	नाहर, पूरनचमंद पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १७५९ एवं विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४३५
१४०.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरत्नसूरि	वासु पूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ७२२
१४१.	१५३२	वैशाख...।	अमररत्नसूरि	अभिनंदस्वामी की धातु प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४४६
१४२.	१५३२	वैशाख....।	अमररत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ७१२
१४३.	१५३२	ज्येष्ठ वदि १३	अमररत्नसूरि	महावीर स्वामी की धातु-पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनिविशाल विजय, पूर्वोक्त, लेखांक २८१
१४४.	१५३२	वैशाख सुदि ३	अमररत्नसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, नागौर	विनय सागर, पूर्वोक्त लेखांक ७४५ एवं नाहर, पूरनचंद, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १३२३
१४५.	१५३२	वैशाख...।	अमररत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी तीर्थ प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ देरासर, डभोई	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ५७
१४६.	१५३३	माघ सुदि ५ रविवार	देवरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ३०८
१४७.	१४३५	माघ सुदि ५ शुक्रवार	आनन्दप्रभसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, गेरीता	वही, भाग-१ लेखांक ६७१
१४८.	१५३५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	अमररत्नसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चाणस्मा	वही, भाग-१ लेखांक ११४
१४९.	१५३५	आषाढ़ सुदि २ मंगलवार	अमररत्नसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर गेरीता	वही, भाग-१ लेखांक ६६६
१५०.	१५३६	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	अमररत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, पाडीव सिरोही राजस्थान	नाहर, पूरनचंद पूर्वोक्त भाग-२ लेखांक २०९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५१.	१५३६	पौष वदि...गुरुवार	सिंहदत्तसूरि	नमिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, सीहोर	नाहर, पूरनचंद पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १७३७ एवं विजय-धर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४६७
१५२.	१५३६	माघ सुदि ५ शुक्रवार	पं. उदयरत्न	पंचतीर्थी प्रतिमा	जैन मंदिर, बड़ावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ९८
१५३.	१५३७	पौष सुदि ९ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर सोमदेवसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी-२ शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर पूर्वोक्त, लेखांक २३५
१५४	१५३७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चंद्रप्रभ जिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक १५६
१५५.	१५४२	चैत्र वदि ८ मंगलवार	आनन्दप्रभसूरि के पट्टधर मुनिरत्नसूरि	विमलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ४८२
१५६.	१५४२	वैशाख सुदि १ गुरुवार	जिनचंद्रसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ९५
१५७.	१५४२	वैशाख सुदि २ गुरुवार	श्रीसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	दादा पार्श्वनाथ जिनालय, नरसिंहजी की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग-२ लेखांक १३६
१५८.	१५४२	वैशाख सुदि १० गुरुवार	जिनचंद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ८०६
१५९.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	जिनचंद्रसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, सेठ वाडो, खेड़ा	वही, भाग-२ लेखांक ४३२
१६०.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	जिनचंद्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ५१६
१६१.	१५४४	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	विवेकरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ८२४
१६२.	१५४४	—	जिनचंद्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग-१, लेखांक २४९
१६३.	१५४६	माघ वदि १३	विवेकरत्नसूरि	स्तम्भ लेख	मुनि सुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग-२ लेखांक ३२१
१६४.	१५४६	माघ सुदि १३	विवेक रत्नसूरि	चंद्रप्रभा स्वामी की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ७०६
१६५.	१५४७	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	अमररत्नसूरि	वासु पूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, डीसा	नाहर, पूरनचंद, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक २७०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६६.	१५४७	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	विवेक रत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ८५
१६७.	१५४७	पौष वदि ६ रविवार	अमररत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३०६
१६८.	१५४७	पौष वदि १० बुधवार	अमररत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, पाटन	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक २२८
१६९.	१५४७	माघ सुदि १३ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर श्रीसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, कातर ग्राम	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ४९६
१७०.	१५४८	वैशाख सुदि २ शनिवार	जिनचंद्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमाका लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसीपोल खंभात,	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ८३४
१७१.	१५४८	वैशाख सुदि ३	सोमरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	प्रतापसिंहजी का मंदिर, रामघाट, वाराणसी	नाहर, पूरनचंद-पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ४२३
१७२.	१५४९	आषाढ़ सुदि ३ सोमवार	विवेकरत्नसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ११३९
१७३.	१५५२	माघ वदि ८ शनिवार	सोमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	वही, भाग-२ लेखांक २७६
१७४.	१५५२	वैशाख सुदि ३	सोमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिभा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय भोंपरापाडो, खंभात	वही भाग-२ लेखांक - ८९४
१७५.	१५५४	फाल्गुन सुदि...।	विवेकरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ४६६
१७६.	१५५५	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	बृहद्खरत गच्छ का उपाश्रय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, लेखांक २४८५
१७७.	१५५६	वैशाख सुदि १३ रविवार	सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, दाहोद	विनयसागर, पूर्वोक्त लेखांक ८८७
१७८	१५५९	वैशाख सुदि २	विवेकरत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, पादरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त लेखांक ८
१७९.	१५६०	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	विवेकरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३२१
१८०.	१५६०	वैशाख सुदि ३ बुधवार	भावसागरसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक १२३६
१८१.	१५६४	फाल्गुन वदि ५ रविवार	आणंदसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीजापुर	वही, भाग-१ लेखांक ४३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८२.	१५६६	माघ सुदि ५ सोमवार	शिवकुमारसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ७१०
१८३.	१५६७	वैशाख सुदि ३ बुधवार	सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय,	वही, भाग-१, लेखांक ६२४
१८४.	१५६९	वैशाख सुदि ९ शुक्रवार	सोमरत्नसूरि	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय,	नाहर, पूर्वोक्त, जयपुर भाग-२, लेखांक १२१६
१८५.	१५७०	पौषवदि ५ रविवार	शिवकुमारसूरि	अजितनाथ की प्रतिमाका लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १००
१८६.	१५७१	चैत्रवदि २ गुरुवार	आनन्दरत्नसूरि	वासु पूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़नगर	वही, भाग-१, लेखांक ५५२
१८७.	१५७१	चैत्र वदि २ गुरुवार	सोमरत्नसूरि	अभिनंदन स्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, लखनऊ	नाहर, पूरनचंद पूर्वोक्त, भाग-१ लेखांक १५७७
१८८.	१५७१	चैत्र वदि ७ गुरुवार	सोमरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	जैनदेरासर, गेरीता	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक ६७०
१८९.	१५७३	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	सोमरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, खेड़ा	वही, भाग-२ लेखांक ४१४
१९०.	१५७३	फाल्गुन सुदि २ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीजापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखांक ४३३
१९१.	१५७५	माघ सुदि ६ गुरुवार	आनन्दरत्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-१, लेखांक १११
१९२.	१५७५	माघ सुदि ५ गुरुवार	मुनिरत्नसूरि के पट्टधर आनन्दरत्नसूरि	पद्मप्रभ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पद्मावती देरासर, बीजापुर भाग-१,	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ४२१
१९३.	१५७६	माघ सुदि ९ शनिवार	मुनिरत्नसूरि के पट्टधर आनन्दरत्नसूरि	चंद्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	चंद्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदर,	वही, भाग-२, लेखांक १९५
१९४.	१५७७	माघ सुदि १३ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी ४ शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २३७
१९५.	१५७८	माघ वदि ५ गुरुवार	विवेकरत्नसूरि	धर्मनाथ की चतुर्मुख प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, भरुच	मुनिबुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक २९४
१९६.	१५७८	माघ वदि ५ गुरुवार	विवेकरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनि सुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग-२ लेखांक ३३७
१९७.	१५७८	माघ सुदि ८ गुरुवार	विवेकरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहतापोल बड़ोदरा	वही, भाग-२ लेखांक १७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९८.	१५७९	वैशाख सुदि ५ सोमवार	विवेकरत्नसूरि	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनात जिनालय,	मुनि विशालविजय, राधनपुर पूर्वोक्त, लेखांक ३३६
१९९.	१५७९	फाल्गुन सुदि ५ सोमवार	शिवकुमारसूरि	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर,	मुनि जयंतविजय, भ्रामरा ग्राम आबू, भाग–५, लेखांक १८२
२००.	१५७९	फाल्गुन सुदि ५	शिवकुमारसूरि	शीतलनाथकी. प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय कडाकोटडी, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग–२, लेखांक ६१५
२०१.	१५८१	माघ सुदि ५ गुरुवार	सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, दौलतसिंह पूर्वोक्त, लेखांक २४७
२०२.	१५८३	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	मुनिरत्नसूरि के पट्टधर आनंदरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर,	मुनि विशालविजय, राधनपुर पूर्वोक्त, लेखांक ३४२
२०३.	१५८४	वैशाखवदि ४	शिवकुमारसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग–२, लेखांक ३४८
२०४.	१५८४	वैशाख सुदि ४	शिवकुमारसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, झुंडाल	वही, भाग–१ लेखांक ७७५
२०५.	१५८६	माघ वदि ५	उदयरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	देरी नं. ७१/२ पंचतीर्थी, शत्रुञ्जय	मुनिकंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ४५२
२०६.	१५८७	पौष वदि ६ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर शिवकुमारसूरि	वासु पूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	चंद्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुर, बड़ोदरा	बुद्धि सागर, पूर्वोक्त भाग–२, लेखांक १९३
२०७.	१५८७	माघ वदि ८ गुरुवार	उदयरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमन्धरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, भाग–१ लेखांक १२१६
२०८.	१५८७	माघ वदि... गुरुवार	उदयरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ईडर	वही, भाग–१, लेखांक १४७७
२०९.	१५८७	माघ वदि ८ गुरुवार	उदयरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	वही, भाग–१ लेखांक ४६८
२१०.	१५९१	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	संयमरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, ऊंडीपोल, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक ६७३
२११.	१५९९	ज्येष्ठ सुदि १०	संयमरत्नसूरि विनयमेरूसूरि	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमाका लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	वही, भाग–६ लेखांक ८६०
२१२.	१५९९	ज्येष्ठ सुदि ११ रविवार		आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	नाहटा, अगरचंद पूर्वोक्त, लेखांक १५७७
२१३.	१६१०	चैत्र सुदि १५ बुधवार	उदयरत्नसूरि के पट्टधर सौभाग्यरत्नसूरि के परिवार		विमलवसही, आबू	मुनि जयंतविजय, आबू, भाग–२ लेखांक १९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

			के हर्षरत्न उपाध्याय, पं. गुमणंदिर, माणिकरत्न, विद्यारत्न, सुमतिराज आदि			
२१४.	१६१२	वैशाख सुदि ६ बुधवार	संयमरत्नसूरि	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त ३५१
२१५.	१६४३	फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार	संयमरत्नसूरि के पट्टधर कुलवर्धनसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, पादरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ११
२१६.	१६६७	वैशाख वदि ७		शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ६१०
२१७.	१६६७	वैशाख वदि ७	कुलवर्धनसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुंभारवाडो, खंभात	वही, भाग-२ लेखांक ६४९
२१८.	१६८३	ज्येष्ठ सुदि ६ गुरुवार	कुलवर्धनसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो पाडो, पाटन	वही, भाग-१ लेखांक ३६१

इस प्रकार यह स्पष्टहै कि आगमिकगच्छ १३वीं शती के प्रारंभ अथवा मध्य में अस्तित्व में आया और १७वीं शती के अंत तक विद्यमान रहा। लगभग ४०० वर्षों के लंबे काल में इस गच्छ में कई प्रभावक आचार्य हुए, जिन्होंने अपनी साहित्योपासना और नूतन जिन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठापना, प्राचीन जिनालयों के उद्धार आदि द्वारा पश्चिमी भारत (गुजरात, काठियावाड़ और राजस्थान) में श्वेताम्बर श्रमणसंघ को जीवंत बनाए रखने में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह भी स्मरणीय है कि वह यही काल है, जब संपूर्ण उत्तर भारत पर मुस्लिम शासन स्थापित हो चुका था, हिन्दुओं के साथ-साथ बौद्धों और जैनों के भी मंदिर-मठ समान रूप से तोड़े जाते रहे, ऐसे समय में श्वेताम्बर श्रमण संघ को न केवल जीवंत बनाए रखने बल्कि उसमें नई स्फूर्ति पैदा करने में श्वेताम्बर जैन आचार्यों ने अति महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

विक्रम संवत् की १७वीं शताब्दी के पश्चात इस गच्छ से संबद्ध प्रमाणों का अभाव है। अतः यह कहाजा सकता है कि १७वीं शती के पश्चात् इस गच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया होगा और इसके अनुयायी श्रमण एवं श्रावकादि अन्य गच्छों में सम्मिलित हो गए होंगे।

वर्तमान समय में भी श्वेताम्बर श्रमण संघ की एक शाखा त्रिस्तुतिकमत अपरनामत बृहद्सौधर्मतपागच्छ के नामसे जानी जाती है, किन्तु इस शाखा के मुनिजन स्वयं को तापगच्छ से उद्भूत तथा उसकी एक शाखा के रूप में स्वीकार करते हैं।[१२] आगे हम इसका विवरण दे रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्दर्भ सूची

१. नाहटा अगरचन्द – जैन श्रमणों के गच्छों पर संक्षिप्त प्रकाश, यतीन्द्र सूरि अभिनन्दनग्रन्थ (आहोर १९५८ ई.) पृ. १३५-१६५

२. आषाढ़ादि पनर ओकेतरइ, पोसवादि इग्यारिसि अंतरइ।

धंधूकपूरि कृपारस सत्र सोमवार सर्मथिक अे चरित्र।।

कुमतरुख वणभंग गइंद जिनशासन रयणायर इंदु ।

सद्गुरू श्री अमरसिंह सूरिंद सेवइं भविय जसुय अरविंद ।।

तसुपाटि नयनानन्द अमीबिंदु गुरु, श्री हेमरत्नसूरि मुणिंद ।

आगमगच्छ प्रकाश दिणिंद जसु दीसइ वर परि यरविंद ।।

सुगुरु पसाइं नयर गोआलेर, धणी पुण्यसार रिद्धिउ कुबेर ।

तासु गुम इस वर्णवइ अजस्त्र, साधुमेरुगणि पडित मिश्र।।

देसाई, मोहनलाल दलीचंद, जैन गुर्जर कविओं (नवीन संस्करण, अहमदाबाद १९८६ ई.) भाग – १, पृ. ८५ और आगे .

८५ और आगे।

३. देसाई, पूर्वोक्त, पृ. ४७८ और आगे।

४. वही, पृ. २०१ - २०२

५. देसाई पूर्वोक्त पृ. ३३७ और आगे

६. मिश्र शितिकंठ – हिन्दी जैन साहित्य का वृहद् इतिहास (भाग – १) मरु गुर्जर (वाराणसी १९९० ई.) पृ. ४००

७. मिश्र शितिकंठ – पूर्वोक्त, पृ. ३३४ और आगे

८. कर्मग्रन्थ – रचनाकाल वि.सं. १४५०; मलयसुन्दरीकथा – रचनाकाल अज्ञात : सुलसाचरित (प्राचीन प्रति वि.सं. १४५३) कथाकोश (विसं. १५ वीं. शती का मध्य

९. स्थूल भद्र कथानक – प्रकाशित

१०. मल्लिनाथ चरित (१३ वीं शती के आसपास)

११. स्थूल भद्रास (१६ वीं शती के प्रथम चरण के आसपास)

१२. जैन विद्या के आयाम (दलसुख भाई मालवणिया) भाग – ३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org